उपसंहार

कविता साहित्य की सबसे आदिम विधा है जो मानव समाज को संस्कारित करने के साथ-साथ उसे अपने परिवेश के प्रति संवेदनशील और जागरूक बनाती है । यही संवेदनशीलता मानव समाज की ऐसी मूल्यवान पूँजी है, जो एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य के सुख-दुख से जोड़ती है। संवेदनशीलता परिवर्तनशील है। परिवर्तन संवेदनशीलता के साथ-साथ मानव एवं मानव समाज में भी दिखाई देने लगता है।

समाज में उपस्थित किसी भी प्रकार की वस्तु, घटना, स्थिति या अनुभूति के प्रति क्रिया या प्रतिक्रिया के फलस्वरूप उससे लगाव की स्थिति संवेदना है और कविता को पढ़कर होने वाली अनुभूति या भावबोध ही काव्य-संवेदना कहलाता है। कवि समाज का सबसे संवेदनशील प्राणी होता है। वह सूक्ष्म एवं गहन भावों को बड़ी सूक्ष्मता और गहराई से ग्रहण करता है और उसे अपनी कविता के माध्यम से प्रकट करता है। इसीलिए हम कह सकते हैं कि कवि अपने समाज, परिवेश, स्थान या वातावरण में विहार करते हुए पशु-पक्षी, प्रकृति तथा विभिन्न भौतिक वस्तुओं एवं संसाधनों से साक्षात्कार करता है। वह अपने परिवेश को अत्यन्त गहराई के साथ महसूस करता है।

बीसवीं सदी के अंत में वैश्वीकरण के प्रसार और प्रभाव से जो आशाएं और अपेक्षाएं थीं, वे आधी-अधूरी रहीं। पूंजी एवं बाज़ार पर केंद्रित वैश्वीकरण का क्रूर चेहरा आज हमारे सामने उपस्थित है, इसने हमारे समक्ष अस्मिता के संकट का दौर खड़ा कर दिया है, जिससे बीसवीं सदी के अंत में जो विमर्श उभर कर आये थे वे आज प्रमुखता के साथ साहित्य में जगह पा रहे हैं। स्त्री-विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, पर्यावरणीय विमर्श, किन्नर विमर्श इत्यादि वे विमर्श हैं जिन्होंने न केवल अपने स्वरों को तेज किया हैं, बल्कि उनमें

अपने अधिकारों को पाने की छटपटाहट और भी तेज हो गयी है। सुरेश सेन निशांत अपनी कविताओं के माध्यम से उन लोगों के अधिकारों की आवाज पुरजोर तरीके से उठाते हैं और उन्हें अपने परिवेश के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बनाते हैं। सुरेश सेन निशांत की कविता की एक ख़ास विशेषता यह है कि वह स्त्री की विविध अवस्थाओं पर काव्य तो रचते ही हैं, साथ ही वे स्त्री को स्त्री-विमर्श के परम्परागत खांचे में नहीं देखते।

सुरेश सेन निशांत ने हिमाचल के पर्वतीय लोक जीवन का संघर्ष और श्रम-सौन्दर्य एवं प्रकृति के सौंदर्य को अपनी कविता के संसार में प्रमुखता से जगह दी है। लोक-जीवन एवं प्रकृति से निकटता ही सुरेश सेन निशांत के काव्यमयी संसार को विस्तार देती है। यही कारण है कि कवि सुरेश सेन निशांत अपनी कविताओं में कहीं बाल सुलभ चेष्टाओं को रेखांकित करते हैं तो कहीं किसानों एवं श्रमिकों के संघर्षों का चित्रण करते हैं। लोक से वे चावल जैसी छोटी सी किंतु मनुष्य के सबसे निकट की वस्तु उठाते हैं और उसके माध्यम से वहां के रीति-रिवाज और लोक-परम्परा का चित्रण एक नितांत नए दृष्टिकोण से करते हैं।

इक्कीसवीं सदी के तनावों और संघर्षों ने उन सब इलाकों को भी प्रभावित किया है जो सुदूर कहीं अपने ही रंग व स्वाद में जीवन को जीते हुए दिखाई देते हैं। विस्थापन आज की एक बड़ी समस्या है जिसने हिमाचल प्रदेश जैसे राज्य को बहुत प्रभावित किया है। हिमाचल के लोक जीवन में विस्थापन की समस्या के प्रमुख कारण वहां की भौगोलिक स्थिति और कृषि जीवन हैं। औद्योगिक स्थिति भी इसके अलावा विस्थापन का एक प्रमुख कारण दिखाई देती है। सुरेश सेन निशांत की पीड़ाओं का केन्द्र विस्थापन की यही समस्या है, जिसके कारण वहाँ के लोग अपनी मातृभूमि से कटते जा रहे हैं। इस कटाव के कारण उनमें एक ओर पीड़ा और दुख की अनुभूति है और दूसरी ओर अकेलेपन की त्रासदी भी

मौजूद है। निशांत जी की कविताओं में विस्थापन की यह पीड़ा बहुत मार्मिक ढंग से दिखाई देती है।

सुरेश सेन निशांत हिमाचलीय लोक जीवन के महत्त्वपूर्ण जनवादी कवि हैं, जिन्होंने अपने काव्य-सरोकार के माध्यम से सामाजिक सरोकार को भी निभाया है। सुरेश सेन निशांत अपनी कविता के माध्यम से लोकतांत्रिक मूल्य की स्थापना करते हैं। निशांत जी में जनवादी चेतना का विकास भारतीय परिवेश में हुआ है। भारतीय देश में अमीर-गरीब, ऊँच-नीच जात-पात इत्यादि की खाई बहुत मिलती है। वैश्वीकरण, बाजारवाद, पूँजीवाद और नई औद्योगिक नीति ने इस खाई को और अधिक ही बढ़ाया है।

सुरेश सेन निशांत की छवि-सामाजिक सरोकार से परिपूर्ण एक ऐसे कवि एवं कर्तव्यनिष्ठ नागरिक की है जो समाज व साहित्य के प्रति प्रतिबद्ध है। वे साम्प्रदायिकता और दहशतगर्दी जैसी भयंकर समस्याओं के विरुद्ध एक मुहिम चलाते हैं। वे अपनी कविताओं में इसी सांप्रदायिकता, आतंकवाद, दहशतगर्दी के खिलाफ प्रतिरोध जताते हैं, ताकि बंधुत्व एवं भाईचारे की स्थापना की जा सके।

इक्कीसवीं सदी में बाजारवाद के प्रभाव से बहुराष्ट्रीय-कंपनियों ने एक देश के उत्पादों को अन्य देशों में सुलभता से भले ही उपस्थित करा दिया है, लेकिन इससे हमारे परंपरागत बाज़ार एवं कुटीर उद्योगों को क्षति ही पहुँची है। सुरेश सेन निशांत इस तरह के बढ़ते बाजारवाद के कारण निरंतर फैलती अपसंस्कृति तीखा अपना प्रतिरोध दर्ज करते हैं।

सुरेश सेन निशांत की भाषा अत्यन्त सरल एवं सहज है, जिसके कारण उनकी कविताएँ आम जन के दुख-दर्द से गहरे रूप में साक्षात्कार करती हुईं प्रतीत होती हैं। उनकी कविता में वैचारिकता और दार्शनिकता के आडम्बरों से दूर मधुरता एवं लय से पूर्ण भाषा

का प्रयोग मिलता है। इसीलिए निशांत द्वारा रचित कविताएँ सीधे-सीधे हमारे हृदय पर प्रभाव छोड़ती हैं।

निशांत जी की कविता एक ओर संवेदनाओं से भरपूर है, तो दूसरी ओर उसमें समाज एवं पर्यावरण के प्रति एक प्रतिबद्धता भी देखी जा सकती है। सुरेश सेन निशांत ने मुक्तक छंद में रचना की है, जिसमें लयात्मकता का पुट देख जा सकता है। इसके अलावा निशांत जी की कविता में आंतरिक लय का गुण विद्यमान है। यह आंतरिक लय बाह्य एवं आंतरिक दोनों रूपों में दिखाई देती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सुरेश सेन निशान्त अपनी काव्य भाषा के माध्यम से इक्कीसवीं सदी की कविता में प्रमुखता से उभर कर सामने आते हैं।